Raj Express (Indore), 18th November 2026, Page – 03

विचार-विमर्श

आईआईटी इंदौर में पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला शुरू, सड़क, पुल, फुटपाथ और भवन निर्माण में ठोस अपशिष्ट के उपयोग पर होगा मंथन

कचरे से बनेगा निर्माण का खजाना, विशेषज्ञ तलाशेंगे नई तकनीक

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

शहरों में तेजी से बढ़ता ठोस कचरा अब निर्माण क्षेत्र के लिए उपयोगी संसाधन बन सकता है। इसके लिए कचरे को आधुनिक तकनीकों की मदद से टिकाऊ निर्माण सामग्री में बदलने के विकल्प तलाशे जा रहे हैं। इसी दिशा में आईआईटी इंदौर में भारत और श्रीलंका के विशेषज्ञ पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में जुटे हैं। इसमें ठोस अपशिष्ट से सड़क, पुल, फुटपाथ और भवन निर्माण के घटक तैयार करने की संभावनाओं पर चर्चा की जा रही है। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के प्रायोजन और साउथ ईस्टर्न यूनिवर्सिटी ऑफ श्रीलंका के सहयोग से आयोजित कार्यशाला का विषय ''सतत निर्माण





में ठोस अपशिष्ट का उपयोग : उच्च स्तरीय तकनीकी एवं प्रबंधकीय दृष्टिकोण'' (एसडब्ल्यूएसीएचटीए) है।

नैनो और जियोपॉलिमर तकनीक पर रहेगा जोर: कार्यशाला में नैनो प्रौद्योगिकी और जियोपॉलिमर तकनीक जैसी उभरती विधियों के माध्यम से अपशिष्ट आधारित निर्माण सामग्री विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विशेषज्ञ ठोस कचरे के पुनः उपयोग, संसाधनों के बेहतर प्रबंधन और निर्माण क्षेत्र में इसके व्यावहारिक इस्तेमाल के तरीकों पर विचार साझा करेंगे। उद्देश्य कचरे को उपयोगी संसाधन में बदलकर सतत अवसंरचना और चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है। उद्घाटन सत्र में आईआईटी गुवाहाटी के प्रो. श्रीदीप, आईआईएम मुंबई की प्रो. अंजू सिंह और आईआईएम इंदौर की प्रो. श्रुति सहित उद्योग विशेषज्ञ, शोधकर्ता, शिक्षाविद और भारत-श्रीलंका के प्रतिनिधि शामिल हुए।

सतत विकास के लिए संसाधनों का बेहतर उपयोग जरूरी

आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. जोशी ने कहा कि सतत विकास के लिए नवाचारी सोच और उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग जरूरी है। ठोस अपशिष्ट को उपयोगी निर्माण सामग्री में बदलना चक्रीय अर्थव्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग से शोध, तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक समाधानों को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। कार्यशाला में अनुसंधान निष्कर्षों के आदान-प्रदान के साथ निर्माण और पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में भारत तथा श्रीलंका के संस्थानों के बीच सहयोग की संभावनाएं भी तलाशी जाएंगी। इसका समन्वय आईआईटी इंदौर के डॉ. ललित बोराना और प्रो. मृगेंद्र दुबे कर रहे हैं।